

नमः ममक्षमहाहयविष्णुसमक्षं यास्यहगवद नमः
नाकयमां यावदवीचियांमेनविषमां ॥ १ ॥ कृकमन्य
स्त्रियहक्षमन्य ॥ हनमंमनायाक्षिसहस्र ॥ नाथमयाक
ययापनययं नागयसंयुति ॥ कासिकययं ॥ ५ ॥ ना
क्षिविकसंलामृति ॥ ६ ॥

ASHA ARCHIVES

KY. 3812. 5

न सा कश्चन समय समस्त ॥ १ ॥ कश्चन तदं विमल लक्ष्मं
॥ १ ॥ सत्यानाय कश्चिन्निगमहि मं ॥ स्वयमनमोदि नम
यि यत्र विहिमं ॥ कदि दाना मम माम स पायं ॥ स्तुतया ना
थ कशाग विलायं ॥ ५ ॥ ददमन व्यासुत्र जागो नां ॥ मिश्र
कनत्र कं पुन ग मिनां ॥ सत्या रु निव सक्ति सदा द्वा ॥ जक्र

सिग अ समयि न अ समयि वा द्वा ॥ १ ॥ कनम नाय मि स
ऊका नृक्षं ॥ यी कृ ग मी नंग क का नृक्षं ॥ ०० मि ग नृ ह ग य नः
हव मि म नो मि ॥ या व न्न न कं ने द म ग्वा मि ॥ ७ ॥ कि ॥ स्व
पुन्य क नो मि क लायं ॥ मय सि रु ग य न मा म कि ना था ॥ अथ
वा य मि क या द अ यूक्षं ॥ कनय स वि वि वि वि क म यि यू दं

॥ १० ॥ सप्तमं क्रमां सिद्धां सिद्धिं सिद्धयं ॥ कथयति कथयं
किं किं किं दूखं ॥ कसमां कुरुते कुरुते नयनं हि न कुरु ॥ क
यं मा कुरु मा मिह न कुरु ॥ १० ॥ दंति सप्तमं क्रमं युक्तं कलाः
यं ॥ जायते मयं थ कथि मयि थिं ॥ मां सा सिद्धिं गीता सुक
ययं नं ॥ ह मथा थि ह्या दुरु मयं दं ॥ ११ ॥ अज्जन युगिं

कायाद्रुका सिद्धिः ४ सिद्ध्या यमं कुरुतां मं लुनी सुखा ॥ सुखं दु
कुरुति न कुरुते वस ॥ युषा युक्तं कुरुतां कुरुतां ॥ १२ ॥ अचन
यमं मयि ताचन हिनां ४ विविधिं व्याधि मस्तु हयनां ॥ कल
यि युक्तं युक्तं सतीना ॥ किन संगतं जायते मयं वस ॥ १३ ॥
गमं व्याधिं गुरु किं ॥ गयो मियां किं सदा किं ॥ सत्र

मिमज्जस्य पूसाही मय्वं ४ यिका जस्य त्वं जिनरुन ॥ १४ ॥
ल्लमि ला क ग्वनयी गीयमानं ॥ मूरसि रुगवन मा मरुता
थ ४ लरूमिया मनूजी कमादिकया ती ॥ ता सयजाग समा
कृतया नि ॥ १५ ॥ षठविषयन्द्रिययञ्जलमनसा ॥ रुका
वरूपायंया कृतवयूया ॥ निर्यञ्जलमया स्मिन् सकलं

रुथला जा निमिद्रं ॥ रुमगाविकरं ॥ १६ ॥ नगुन संयमि
नमला केग ॥ पुषगा विविधिं रुलां कामचा ४ रुना रुकाया ३
यिकदायं ॥ सुगतिरुमगायामिहमा रु ॥ १७ ॥ साहं द्वय ३
विना गनहद ॥ स्वसंसात्रनहादधिसु ४ यतिथामनगा रु
यनवा रु ॥ लंगुन द्रुतिद्रुतिभागनना रु ॥ १८ ॥ दसि न

सुगता नूतन नूतना ॥ त्वं यत्तु हि न यद्दृष्टः खी न सत्याः ॥ नि
जिगद्गुय मा मस माताः ॥ त्वं स किं भू मक्षान अया ता ॥ १९ ॥
सकल रुग्ता न विं कि न न दत्ता ॥ त्वं यत्तु मयि द रुग्ता स दत्त
॥ रुग्ता न अ नू न क नू ना सिंधुः ॥ त्वं रुग्ता वि वि धां का ल स य
धू ॥ २० ॥ सि मा वि द मि न क म वि रुग्ता ॥ त्वं यत्तु हि न वी ष

यं या संघाः ॥ दि या ध्वान सं मा हि न चि रु ॥ त्वं या सक सा ध्वान
क्ष चि रु ॥ २१ ॥ यत्तु मय क नू न म यि क नू ना अ ॥ म हि यः
मि दू खं न क ला जा मि रु अं ॥ क थ मि या मा ह न क्षा रु ग द यं
वि ष य स सि न क रु ग न रु म ना ॥ २२ ॥ सक ल रु ना थ य मि
क्ष क नू न ॥ सा किं रु वे मा नि रु मा रु न ना ॥ रु न न रु रु सि

खटविषयकं ॥ हवमा ॥ यत्र मा मा विनूयकं ॥ २३ ॥ नाथक
 यासय व्यामविगता ॥ सत्त्ववृद्ध ॥ वृधधत्तधत्ता ॥ धत्तधत्त
 निस्समसिगवदूकग ॥ सजकिमिस्तंरुनमनिस्समगव्यं ॥
 ॥ २४ ॥ ॐ किरुगवन्मत्तक्षनायि ॥ यन्युधसमरुनदंरु
 गदरुनरुद ॥ श्रीयाकनकावत्तयासज्जनयकिस्सुन्दत्तयि

उतमयि ॥ २ ॥

विधिवित्तस ॥ २५ ॥ ॐ ह्यायावत्ताकिरुगवत्तरुदत्तकः
 सु ॥ यत्तयमियादविगंविगंस्मायंस्मायं ॥ ॐ वत्त ॥
 ॥ ३ ॥ नमावृद्धाय ॥ ॐ ॥ रुकमयिस्सुत्तसंघे ॥ सिद्धिगधर्व
 ऊरु ॥ द्विविधयियुविधिंरु ॥ स्मायवागि ॥ यमिक ॥ अस्म
 यिकरुगकि ॥ नोमिसंयुद्धमाय ॥ नरुसियगमूठमाकि

किन्त्यानिदिनस ॥ १ ॥ अयिगदमिमयक ॥ अंयनि (गं।
वयासं ॥ अविनकनकव ॥ सुतयमायमाक ॥ सुतविमय
त्रिवम ॥ सुयलामसुतया ॥ दगवत्रमयनिम्यं ॥ सुयलामंय
लामं ॥ मदनवतविम ॥ कामय ॥ अककले ॥ विरु
वनदिनक ॥ म्मीतनाजातहंउ ॥ समसुखरुतयाउ

हृदसंज्ञानगज ॥ दगवत्र ॥ ३ ॥ असुत्रसुत्रनजाना ॥ आ
गऊत्मागहव ॥ सकनउवनधका ॥ लोकणसुदसद
सयिममनूऊधका ॥ अऊयानिस्वयंर ॥ दगवत्र ॥ ४ ॥
उदयगिनिनक ॥ विद्रमऊदगास ॥ विमिनकिनः
सहला ॥ वऊनकंयजाना ॥ जयियमिमनतात ॥ सवथसा

यिसूफा ॥ दगवन्न ॥ १ ॥ दिन दन्न सनया शुगीर सग्निं
गगभक ॥ कितक वन्न रुन्या सवन्न गमसिन्न ॥ अविगग
मदनाग ॥ सवन्न सायिसूफ ॥ दगवन्न ॥ १ ॥ पवन्न उवन्न
क ॥ वाउगो द्वा द्वे वन्ना ॥ ययनियम विधिह ॥ सामवन्न
पवन्ना ॥ अमन्न कन्न यानि ॥ सायिष फ्राय सूफा ॥ दगवन्न

॥ १ ॥ दूवन्न यदन्न नील ॥ दूमुत्तीका यन्ना ॥ सन्न मियू
वन्न हन्ना ॥ विगन्न कृत्तिगन्न यानि ॥ हन्निय विधिह सूफा ॥ गहन्ना
वा ॥ गन्न मन्ना ॥ दगवन्न ॥ १ ॥ ॥ हिमगिनिगिनि खन्ना ॥ स
यन्न हन्ना यानि ॥ स्त्रीयून्न दहन्न दक ॥ वाउवन्न मन्ना यानि ॥
सहगिनिवन्न यानि ॥ सायिसूफ ॥ विगन्ना ॥ दगवन्न ॥ १ ॥

मात्रिककृतिगयानिःदूरंशायानवानाःसूत्रयमित्रयिगाः
व्याःविश्वमसूत्रवताःअनिगिनिगिवसूफःकामयंकनिम
एत॥दगवत्र॥१४॥हिमसंगिकूमजालाःमद्ययामात्रः
हमरु॥दृढकथितशुक्रागःनांगतिगकिहस्ता॥वत्रवूह
सयिकासो॥नवकिकष्टन॥दगवत्र॥१५॥गजमू

खदगनेकःसर्वकाविप्रहन्ता॥अविगकमदधामःवत्य
याजीष्टगधुगमयतिनयिगूफा॥यानूनिवानमास्तु॥दग
वत्र॥१६॥अटसिक्कसूमनीनाःयस्यगकिहूमागःन
वकसस्वयूय॥यूस्मूखाकावहन्ताःछितयनकनशाः
सो॥निक्षसूफकूमागा॥दगवत्र॥१७॥कयित्रऊनक

सायाः न कया ना नू भू क्र ॥ यगु यमि नमि कान ॥ दग्ध का वाः
मिद क्रः समन न द ति कांग ॥ सायि सुका हू नां ॥ १४ ॥ दग वन
॥ १४ ॥ ॥ ऊम वन नू भू व सः ॥ य क्र दे त्या न ल लाः ॥ दि वि शु वि
गग ॥ १४ ॥ सा क या सा न था न ॥ रु व मि म द क ठं क्रः ॥ विं क्रि
ता रु यि सु फा ॥ दग वन ॥ १५ ॥ ॥ अ व य नू ह ना ॥ व स ह

॥ १५ ॥ गि न या ॥ क उ य नू ह विं गि स्यः ॥ या स या मि क ग ग न ॥ य
न यू व मि वि ता सो ॥ मा हि नां ग यि सु फा ॥ दग वन ॥ १६ ॥
ह व नू न नि धि म ए न ॥ मा ह ना ला य ना ग ॥ म नू का यि न क ना
या ॥ १६ ॥ मि ना मू रु वि रु ॥ स म स स व रु न ह ना ॥ या रि ग ॥ रु उ
वि सु फा ॥ दग वन ॥ १७ ॥ ॥ अ ग न व स न ह ना ॥ ल व माः

नां विमूयाः अलमस्वित्तयिचा न॥ पुनवदग्धदहा ३३ ह्यः
मिनिविहाना॥ निश्यसूफचनगता॥ दगवम ५५ १७ ॥ अं
हाननिदत्ररुतिः कमसिपुसूफ॥ रुषाविगातगयनवि
षयायधन॥ कात्रगुहागुहसंयन्त्रिकीहिमाता ३३ कागं
ह्रियः सननमवतमास्तुनसं १९॥ सूपुहागंनवकस्य

हानान्मात्ताकचक्रव ४॥ अहानंमिमिताधनानिश्यसूफा
हिमात्रवि १०॥ सूपुहागंसूत्ररुतं ४॥ शिषायसूहिनादि
न॥ बुद्धधम्मवसंचयपुधमामिदिनदिन ११॥ पुनय
हागंयूनसूहिमात्रवि ४॥ पुनगगाकम्यपूनप्रयसर्वना ४॥
मय्यऊमाऊलाकथेवहमन॥ गतागमिमूरुऊनामयूधं

ति ॥ २३ ॥ तिर्थेषु गच्छन्तं गतानि यि वन्ति ता यं नृपि व
 क्ति न च न लुप्तं मय्यर्थे ति ॥ २४ ॥ भक्तियोगे नैव यि संः
 लुप्तं स ॥ न जायते गुणनिधि गुणगगनस्य ॥ २५ ॥ लु
 त्वा सा कायु नू म ह्य म नि व नं ॥ स ह्य म य म् स म य म् जि
 म् व न म य म् ॥ न न व सा का वि तं च नृ लु लु ति ह य म्

॥ २६ ॥

द ग व नृ ग द्वा य म् वि न्द ता ॥ २६ ॥ ति ग्रा म् य म् नि म
 ल वृ ह्ण ह द्वा य म् ॥ स य म् ल वृ ह्ण स म् य म् ॥ २७ ॥
 ॥ २८ ॥ म म् ल क न्ता य म् ॥ लु ल्ता य म् म म् य म् क न म् य म्
 ल ॥ सं य म् ल वृ ह्ण व द न वृ ह्ण य म् ॥ स य म् ल वृ ह्ण म् य म्
 क न म् क म् म ग ॥ न य म् य म् वि व न ल वृ ह्ण म् य म् ॥ २९ ॥

उडगनांगवस्यिनकयासवकुं॥नकाधत्रंहिमडुषागः
मिवासूदनं॥प्रक्रस्वमंगुनिधत्रंमधूनंनवाक॥नयद
मयानिमद्वयवर्धस्वन्नमा मि॥१॥मासाधत्रंकनक
वर्ध्विहविगाग॥नयवयजठविहविमयोसचन्द्र॥
कयागिनावनधनायसूवर्ध्ववर्ध॥नयप्रयानिमद्वय

प्रधत्रंनमा मि॥३॥नसाकक्षमवसाकिमनामध्वयं॥
गङ्गाप्रविगसडवकससयनाग॥चिन्तामलियुवनकुंछु
सचष्टगछु॥नयप्रयानिहृमिसर्वकनंनमा मि॥४॥
लंझानमागियनराविकसर्वसत्वा॥संसात्रयंकटिमिमा
ध्वममनसत्वा॥आसाकिम॥यथमनरूपधधिमार्ग॥नं

यप्रयानिवनमार्गददंतमामि॥ १॥ गत्वा च यनननकवू
अविचिमग्नं॥ गतिकुमंडूदिविभासत्रहंसयस॥ यना
नकासकनदू॥ खविनागयन्ति॥ गंयप्रयानिननकाः
ग्निसमनमामि॥ ६॥ संज्ञासयनियमयात्कहग्नं॥
हमि॥ हधमनाक्रुतिउज्जगनकामनूयी॥ यकम्महमि

मिवधंसिगतनिमिर्ह॥ गंयप्रयानिहमभासनगंतमाः
मि॥ १॥ गत्वा च यननअतिनूयंमनाहवाय॥ १॥ कना
थमरुयंकनसर्वसत्या॥ ६॥ खाष्टवकयस्रजाभिचिम
किदू॥ खं॥ गंयप्रयानिहमकिस्त्रिषगंतमामि॥ ६॥
त्वंपनसाकगकयकनूक्षायसन॥ गूचिमखंडयनयव

कजीष्टमग्नं ॥ कुरुवृषिंति नमो नमो रुषा उवाक्षं ॥ नय
प्रयाति रुषा नमो नमो नमो ॥ ६ ॥ अन्वा न्यरु कुरु
प्रयिंति नय रुषा ॥ संघीय नमो नमो ॥ ३ ॥ युव नमो नय
हि ॥ यस्मिं नमो नमो नमो रुषा उवाक्षं ॥ नय प्रयाति
नमो नमो नमो नमो ॥ १० ॥ गत्या नमो नमो नमो नमो

आदिवृद्धानिहधयः ॥ १४ ॥ ज्ञानेकचक्रममनाः ॥ ज्ञानमूर्किसुथ
 गतः ॥ १५ ॥ वागीश्वरामहावादिः ॥ वादिमाद्यादियूक्त
 वः ॥ वदमासुभावतिस्माः ॥ वादिसिंहायमाजिगं ॥ १६ ॥
 समन्तकमियाभावाः ॥ कृत्वा मासिसूदगनिः ॥ ग्रावत्सः ॥
 सुयहादिकि ॥ एहासुत्कहयकि ॥ १७ ॥ महालीव

गतः ॥ १८ ॥ गतः ॥ गतः ॥
 गवाधिमहात्रिय ॥ १९ ॥
 नमस्कृतमस्तुतः ॥ दग
 कृत ॥ २० ॥ जगत्क
 यमनः ॥ गवाग्रीमा



गवहयशकमः ॥ क
 तकाकाः ॥ ग्रीमा
 काः ॥ धर्मध्वंजमहा
 ग्रीकमस्तुतः ॥
 महाविष्टः ॥ २१ ॥

सर्ववृद्धमहाभागाः सर्ववृद्धात्महावधकः॥ सर्ववृद्धमहाभा
 गः सर्ववृद्धकसासनः॥ ३० ॥ वरुनन्ताहिषकः॥ श्रीः सर्व
 जन्ताधियभजनः॥ सर्वकात्मभजनयतिः॥ सर्ववृद्धधमाधि
 यः॥ ३१ ॥ सर्ववृद्धः महाधिरुः॥ सर्ववृद्धमनागतिः॥ सर्व
 वृद्धमहाकायः॥ सर्ववृद्धसन्धिमिः॥ ३२ ॥ वरुसूर्यः॥

महासाकाः वरुन्दुहि
 विस्ववः॥ वरुकात्यरु
 वृद्धसंगीतिधमाधकः॥
 कागधकः॥ ३४ ॥ वि
 महानः॥ वरुनीष्म



भादिमहाभागाः॥
 वृद्धमवक्रययिकाः॥ वृ
 शीमाः॥ सर्ववृद्धान
 भागाः॥ वृद्धविद्याधमा
 वृद्धः॥ यमाक्रनः॥ ३५ ॥

६४ स्वकृदमहायानः यत्र धर्ममहायुधः ॥ त्रिनत्रिंशत्
 गामिहयः यत्र यद्विद्यार्थवि ॥ ३६ ॥ सर्वपात्रमिमांसा
 मिः सच्चरुमीविहस्य ॥ विसृज्य धर्मभेदाः सम्यग्ज्ञान
 न्द्रुत्यरु ॥ ३७ ॥ मायाज्ञानमहायागः सच्चरुः
 धियः यत्र ॥ अथ यत्र यथाका ॥ निगवह्मनकायधुकः

॥ ३८ ॥ समन्तरुदस
 धमरागर्तः विग्वनि
 लायागुः सच्चरुवस्वर
 र्वधर्मसरोयधुकः ॥
 मायिवाधधुकः ॥ सर्व



र्गजगत्यनि ॥ सर्वय
 ॥ ३९ ॥ सच्चरुवस्वा
 यादधर्मविस्वार्थसु
 महायागः सच्चधः
 र्गान्कमभिगुधः ॥

॥ ४१ ॥ किमिगस्य सन्नात्मा सम्यक् दृष्ट्याधिधृक् ॥ य
युक्तः सर्ववृद्धयुद्धानां ज्ञानादित्सुयुक्तो गवतः ॥ ४२ ॥
युक्तनाज्ञानगमथाद्यायत्वातिगमः ॥ ४३ ॥ अथ साध
कः येन सर्वथाययिष्यमाधकः ॥ सर्वसत्यरूपानां सर्व
सत्यमाधकः ॥ ४४ ॥ इति संग्रहसूत्रकः ॥ अज्ञाननिं

यूदय्यहा ३॥ धा ग्रा ग
का ॥ २॥ बाहूदन्दग
कृणुहका ला ला १ ग
मा का नः १ महीमकु
नः ३ या दा यु ख न या



वीरवीरुत्समयधु
 ययननरु ४॥ गोम
 नं ॥ ३॥ अकयादन
 यक्ताधुगियताजा
 नाथमद्यधमार्थय

नमोऽर्था विग। भगवत् ॥ नानाविह्वलियार्थः ॥ शिष्टरुचिः
 हानसक्तनि ॥ १ ॥ अथ यथावार्थसक्तिः ॥ गूढतानाति
 यधिः ॥ रुच्यगागाद्यनिकम्भः ॥ रुच्ययमहात्रनि ॥ २ ॥ गुह्यगु
 द्वाकधवत् ॥ सप्तचन्दामसुपुहः ॥ यानाक्रमधुत्तकाया ॥
 महाभागनखंपुहः ॥ ३ ॥ ॐ न्दनीत्तगसचिनाः ॥ महानीत्

कयाग्रधुकः ॥ महासमि
 लाकधाङ्गकगाक
 निधनसुत्तः ॥ ग्त्रु
 सुमाभायः ॥ सुधाग
 मासुंयुद्धमाग्नविः



निम्मानरुचक्षः ॥ ४ ॥
 महाक्रमः ॥ महास
 ॥ ५ ॥ वाधंगक
 गेमाग्ननयविः ॥ स
 महासंरगाः ॥ निसंरगा

गगनागमाः सर्वसत्त्वमनाजगः सर्वसत्त्वमनाजगः ॥ ११ ॥
 सर्वसत्त्वान्द्रियार्थः सर्वसत्त्वमनाहमे ॥ यं च स्कंधं चार्थं न
 त्वं ॥ यं च स्कंधं च विमलं धृक् ॥ १२ ॥ सर्वनिर्यानि का गिरु
 सर्वनिर्यानि का विदः सर्वनिर्यानि मागर्जः ॥ सर्वनिर्या
 नदगक ॥ १३ ॥ द्वादशगगर्हवाक्रानाः द्वादशगगकात्

स्रुद्धधृक् ॥ यत्तु सत्यं
 द्वादशगगकात् सत्याथ
 स्रुद्धाहि ॥ विदुः
 नः कायकाटि विरु
 रूढमार्थविदुः ॥ १४ ॥



द्वादशगगकात् सत्याथ ॥ १५ ॥
 त्वया ॥ विगर्हवाक्रानाः
 ॥ १६ ॥ अमयदूधनिमा
 नारिसमयाः सर्ववि
 श्यायायः गगदर्थविः

रावक ४॥ यानस्तीनयनिर्याग ४७ कयानरुसस्त्रिका ४७ १॥
 कुगधुदधिसु ४॥ १॥ कमधुदधिसु ४॥ १॥ अघादधिसु
 मूली १॥ १॥ यागकान्तात्रमिसु ४॥ १॥ १॥ १॥ कययकुगधु
 कुग १॥ सुपदीनसयासनं ॥ यज्ञायामहाकृत्ना १॥ अमा
 चगकुगदर्थकृत् १॥ १॥ सर्वसज्ञायदोता १॥ १॥ विज्ञाना

१॥ १॥ निमाधधु १॥ सु
 मि १॥ १॥ १॥ सर्वसत्य
 सर्वसत्यमनाज्ञादि
 नाविशुमायन ४॥ सर्व
 गिरुयर्थ १॥ सर्वार्थ



१॥ १॥ सर्वसत्यमनाग
 वरुसमयनागन ४॥
 मि १॥ १॥ १॥ सिद्धा
 ४॥ १॥ निमंदिन्धर्म
 १॥ १॥ ययस्कंधार्थ

आन सवकन विरायक ॥ २३ ॥ अनंगकाया गुणकोयकाटिविराय
 खलावधक ॥ २४ ॥ अनंगकाया गुणकोयकाटिविराय
 क ॥ २५ ॥ अनंगकाया गुणकोयकाटिविराय
 ममाङ्गानगमथयकुविंगमि ॥ २६ ॥ सवसंवृद्धवाधया
 वृद्धवाधिननरुज ॥ २७ ॥ अनङ्गनामनुयानि ॥ महामनुः

कृतय ॥ १ ॥ स
 नयक्षक्रामह
 सवकातनित्ताक
 कातनाकि ॥ २ ॥
 नकलाहि ॥ ३ ॥



॥ ४ ॥ महाविन्दुनलक
 नयउक्र ॥ ५ ॥
 विवधक ॥ ६ ॥ अनकात
 क ॥ ७ ॥ सवधम
 न ॥ समाधिकायः

कायाग १ सर्वसंकाशकायमात्र ४ ॥ निम्नानि काया
 काया १५ ॥ ४ ॥ वृद्धनिम्नानि वंगधके ॥ दगदिग्वीखनिमा
 ना १ ॥ यथावज्जगदर्थक ४ ॥ १ ॥ दवाक्तिदवदव ४ ॥
 नन्दादानवा ४ ॥ यमि ४ ॥ जमनलसूत्रय १ ॥ युमथयिथ
 खन ४ ॥ ६ ॥ उमीर्षुएवकान्नाय ४ ॥ कसाकाजगलु

४ ॥ यथाकमदि ए
 मेथिसन्नाहसना
 मधनया ४ ॥ कगइ
 जिवात्र १ ॥ गकुमा
 वृद्धासाकनायक ४



यमिसहान ४ ॥ १ ॥
 यमिक ४ ॥ यज्ञाखः
 ४ ॥ मात्रात्रिमात्र
 यमानयनूजमा १ ॥
 गोरियाशय १ ॥ मात्रा

नायवनिद्रासः॥ अञ्चनायनमासान्ताः॥ नमस्तुयत्रमायु
 नः॥ १०॥ तेनाककमगतिः॥ यामाययान्तविक्रमः॥ क
 विद्यः॥ मन्त्रियपूतः॥ यउरिहृषउनस्तमिः॥ ११॥ वाधि
 सत्वमहासत्वः॥ साकानिगामहृदिकः॥ यज्ञायत्रमि
 तानिष्टः॥ यज्ञकत्वत्वमागर्जितः॥ १२॥ अत्मावित्यत्रवि

सर्वसाविद्याद्वग
 हानाधियः॥ यत्रः॥
 जार्थदगकः॥ ययूया
 ॥ १४॥ यत्रमार्थवि
 सर्वसंयत्कृतः॥ ग्रा



मगनाकान्ताः॥ इया
 यमिष्टुष्टुः॥ मकुम
 नियानिरुययापिचा
 कगुरुगमहानः॥
 नायत्रः॥ १५॥ कुमो

नूस्कागथापंचदश ॥ ६३ ॥ समस्तवस्तुवज्राग्रः ॥ हन
काटिनमास्तु ॥ नमास्तु न्यगागरु ॥ बुद्धयाधिनमास्तु
॥ १ ॥ बुद्धजागनमास्तु ॥ बुद्धकायनमानम ॥
बुद्धयोगिनमास्तु ॥ बुद्धमाउनमानम ॥ २ ॥ बुद्ध
स्मितीनमास्तु ॥ बुद्धसासनमानम ॥ बुद्धवाचनः

मस्तु ॥ बुद्धरावनमान ॥ ३ ॥ अरुवाएवनमस्तु
नमस्तु बुद्धसंरुव ॥ गगनारुवनमास्तु ॥ नमस्तुज्ञान
संरुव ॥ ४ ॥ मायाज्ञानमास्तु ॥ नमस्तु बुद्धनाटः
नमस्तु सर्वसत्त्वयाः ॥ ज्ञानकायनमास्तु ॥ ५ ॥ ॐ मि
यस्मिन् गथागनस्तु मिज्ञानगथापंचदश ॥ ६४ ॥ ॐ सर्वधः

महावसुखावः॥ विसृज्य वज्रं जं जं जं यकी प्रियमिहः
दाः॥ सर्वधर्माय दुस्सर्वतथागतः॥ ह्यानकायमशुभीः
योनिस्तुतिनाः॥ उपादायमिहः॥ जं जं सर्वतथागतः॥ ह्यानकायमशुभीः
महानः॥ उपादायमिहः॥ जं जं सर्वतथागतः॥ ह्यानकायमशुभीः
॥ सर्वधर्माय दुस्सर्वतथागतः॥ ह्यानकायमशुभीः

आ॥ महविद्यासः॥ अथ वज्रधनः॥ ग्रीमानः॥ ह्यानकायमशुभीः
नास्तुतिः॥ यमनाथसंबुद्धः॥ ह्यानकायमशुभीः॥ १॥
अन्यगवद्विधेना॥ यथैकं ह्यानकायमशुभीः॥ संः
साधकाधमाज्ञानं॥ यावाचावैतिदं वचः॥ २॥ अनूमा
यामहानाथ साधूसाधूगुणविभक्तः॥ यमास्माकं महाना

थ सम्यक् संवृद्धया पक् ॥ ३ ॥ अग्नौ भस्म स्यात्तथा स ॥ विः
मूर्तिरुत्तकाक्रित ॥ यथा मा रण वि सू द्र यी ॥ मा मा जा सा
नयादिन ॥ ४ ॥ गमिन्नादात्र वे पत्न्यः महाथ अग्नय
कृत् ॥ वृद्धा नां विषया हवः ॥ सम्यक् संवृद्धा विन ॥ ५ ॥
उय सं हान् गम थ यं च ॥ ६ ॥ आर्य मा मा जा सा ॥ वा

उस सा ह्ययिका ॥ महा या ग ॥ गणा नय कि स मा धि जा स्य
गला रुग य न्क र्ता ग न ॥ ग्री ग म् क म् षी ला वि न रुग य न्क
मङ्गु ग्री हान सत्त्व स्य पत्र मा र्थ ना म संगी कि स मा य ॥
॥ ७ ॥ य ध म्मा ह्नु य ला वा ॥ ह्नु ग्वां क था क था ग
मः ॥ हव द रुषां यथा नि ना ध ॥ जे यं म्वा दि महा य म्म

